KGS IAS

Current Affairs

UPSC Prelims 2024

LECTURE-13

By Kinshuk Sir

(I) Missile defence system

(II) 4th Mass Coral bleaching.

(III) Why Andaman ?? GS II / GS III
IR Security.

KGS IAS

KHAN GLOBAL STUDIES

Most Trusted Learning Platform

KHAN SIR

CURRENT AFFAIRS DISCUSSION

❖ Iron Dome Structure

- Iron Dome is designed to protect against incoming short-range weapons. It operates in all weather conditions.
- It uses radar to track rockets and can differentiate between those that are likely to hit built-up areas and those that are not.
- Interceptor missiles are only fired at rockets expected to strike populated areas.
- The system consists of batteries located across Israel, each with three to four launchers that can fire 20 interceptor missiles.
- There are both fixed and mobile versions of the system.

❖ आयरन डोम की संरचना

- आयरन डोम को आने वाले कम दूरी के हथियारों से बचाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह मौसम की हर स्थिति में काम करता है।
- यह रॉकेटों को ट्रैक करने के लिए रडार का उपयोग करता है और उन रॉकेटों के बीच अंतर कर सकता है जिनके निर्मित क्षेत्रों पर हमला करने की संभावना है और जो नहीं कर सकते हैं।
- इंटरसेप्टर मिसाइलें केवल आबादी वाले इलाकों पर हमला करने वाले रॉकेटों पर दागी जाती हैं।
- इस प्रणाली में इज़राइल भर में स्थित बैटरियां शामिल हैं, प्रत्येक में तीन से चार लॉन्चर हैं जो 20 इंटरसेप्टर मिसाइलों को फायर कर सकते हैं।
- सिस्टम के स्थिर और मोबाइल दोनों संस्करण हैं।

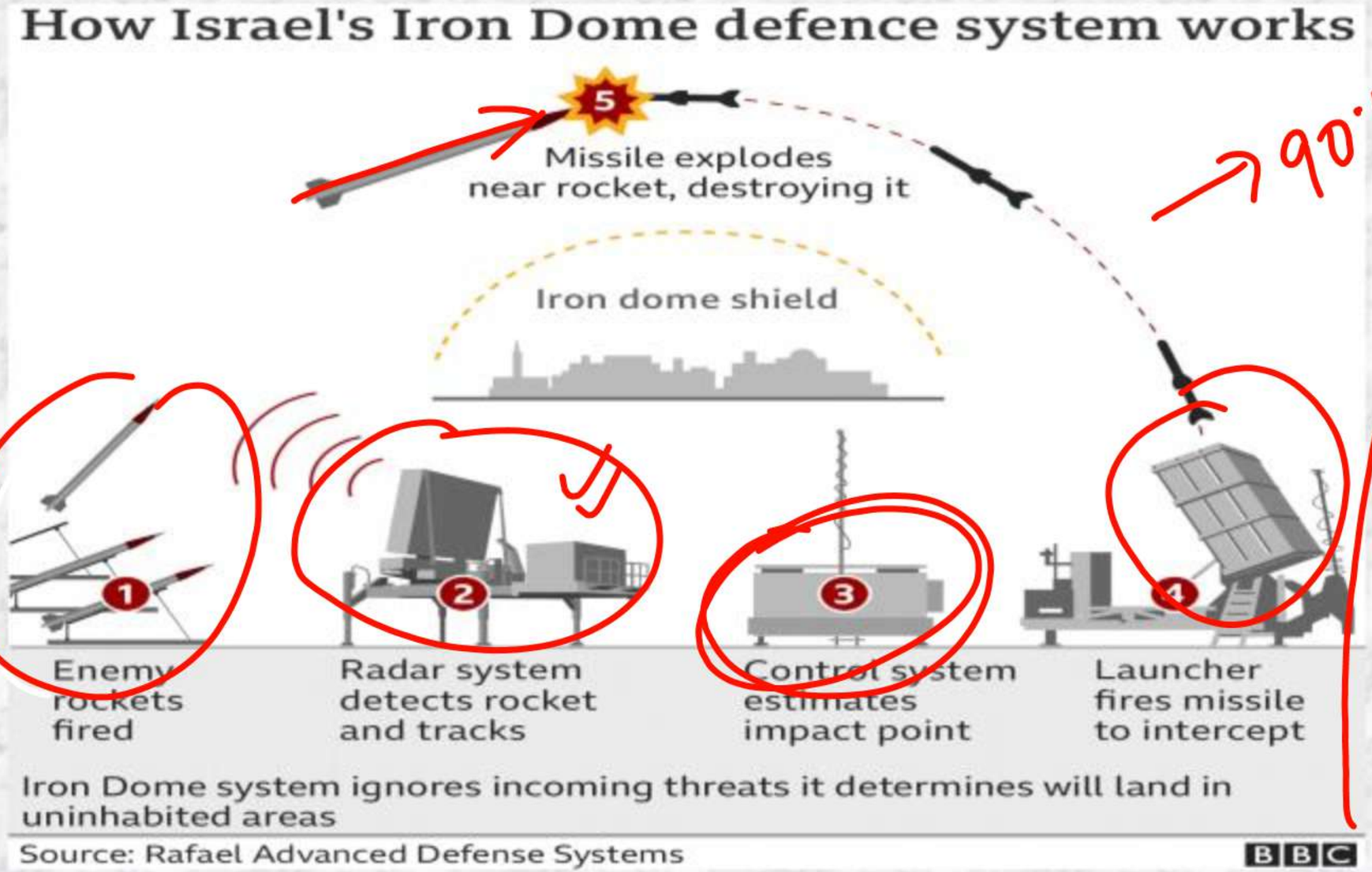

→ 90% efficiency

❖ Iron Dome Structure

- India's Defence System:
- Components of Air Defence
- Long Range interception: Indian Ballistic Missile Defence Programme
- Intermediate Interception: S-400 Triumph (future induction)
- Short Range interception: Akash Air Defense System and Similar Systems
- Very Short-range interception: MANPADS and Anti- Aircraft Guns.

❖ आयरन डोम की संरचना

वायु रक्षा के घटक

- लंबी दूरी का अवरोधन: भारतीय बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा कार्यक्रम
- मध्यवर्ती अवरोधन: S-400 ट्राइंफ (भविष्य में प्रेरण)
- कम दूरी का अवरोधन: आकाश वायु रक्षा प्रणाली और समान प्रणालियाँ
- बहुत कम दूरी का अवरोधन: MANPADS और विमान भेदी बंदूकें।

India Ballistic missile defence program

⇒ Prithvi Air defence ⇒ 80 km height

⇒ Advance Air defence ⇒ 30 km

100/km

Aakash air defense system

→ Small to medium Range missiles

→ 18km

- Indian Ballistic Missile Defence Programme
- It is a double-tiered system consisting of two land and sea-based interceptor missiles, namely the Prithvi Air Defence (PAD) missile for high altitude interception, and the Advanced Air Defence (AAD) Missile for lower altitude interception.
- The two-tiered shield should be able to intercept any incoming missile launched from 5,000 kilometres away.
- The system also includes an overlapping network of early warning and tracking radars, as well as command and control posts.
- The Prithvi Air Defence (PAD) is an anti-ballistic missile developed to intercept incoming ballistic missiles outside the atmosphere (exo-atmospheric).

- भारतीय बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा कार्यक्रम
- यह एक डबल-स्तरीय प्रणाली है जिसमें दो भूमि और समुद्र-आधारित इंटरसेप्टर मिसाइलें शामिल हैं, अर्थात् उच्च ऊंचाई अवरोधन के लिए पृथ्वी वायु रक्षा (PAD) मिसाइल, और कम ऊंचाई अवरोधन के लिए उन्नत वायु रक्षा (AAD) मिसाइल।
- दो-स्तरीय ढाल 5,000 किलोमीटर दूर से आने वाली किसी भी मिसाइल को रोकने में सक्षम होनी चाहिए।
- इस प्रणाली में प्रारंभिक चेतावनी और ट्रैकिंग राडार के साथ-साथ कमांड और नियंत्रण पोस्ट का एक ओवरलैपिंग नेटवर्क भी शामिल है।
- पृथ्वी एयर डिफेंस (PAD) एक एंटी-बैलिस्टिक मिसाइल है जिसे वायुमंडल (एक्सो-वायुमंडलीय) के बाहर आने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने के लिए विकसित किया गया है।

- It has an operational range of 300 km -2000 km.
- It has maximum interception altitude of 80 km. it is designed to intercept incoming ballistic missiles in their intermediate cruising phase.
- With a maximum speed over Mach 5, PAD is fast enough to hit intermediate-range ballistic missiles.
- Advanced Air Defence (AAD) is an anti-ballistic missile designed to intercept incoming ballistic missiles in the endo-atmosphere at an altitude of 30 km (19 mi).
- It is for those targets which somehow get passed through PAD. It is a secondary layer which compliments PAD.
- AAD has an operational range of 150 km to 200 km. It has a maximum speed of Mach 4.5

- इसकी परिचालन सीमा 300 किमी -2000 किमी है।
- इसकी अधिकतम अवरोधन ऊंचाई 80 किमी है। इसे मध्यवर्ती परिभ्रमण चरण में आने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- मैक 5 से अधिक की अधिकतम गति के साथ, PAD मध्यवर्ती दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलों को मार गिराने के लिए पर्याप्त तेज़ है।
- उन्नत वायु रक्षा (AAD) एक एंटी-बैलिस्टिक मिसाइल है जिसे 30 किमी (19 मील) की ऊंचाई पर एंडो-वातावरण में आने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह उन लक्ष्यों के लिए है जो किसी तरह PAD से पार हो जाते हैं। यह एक द्वितीयक परत है जो PAD की प्रशंसा करती है।
- AAD की परिचालन सीमा 150 किमी से 200 किमी है। इसकी अधिकतम गति मैक 4.5 है

❖ Iron Dome Structure

- **Akash Air Defence System**

➢ **Akash is a medium-range mobile surface-to-air missile defence system developed by the Defence Research and Development Organisation (DRDO) and the missiles produced by Bharat Dynamics Limited.**

➢ **The missile system can target aircraft up to 45 km away, at altitudes up to 18,000 m.**

➢ **It has the capability to neutralize aerial targets like fighter jets, cruise missiles and air-to-surface missiles as well as ballistic missiles.**

❖ आयरन डोम की संरचना

- **आकाश वायु रक्षा प्रणाली**

- **आकाश एक मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मोबाइल मिसाइल रक्षा प्रणाली है जिसे रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) द्वारा विकसित किया गया है और यह मिसाइल भारत डायनेमिक्स लिमिटेड द्वारा निर्मित है।**
- **मिसाइल प्रणाली 45 किमी दूर, 18,000 मीटर तक की ऊंचाई पर विमान को निशाना बना सकती है।**
- **इसमें लड़ाकू विमानों, क्रूज मिसाइलों और हवा से सतह पर मार करने वाली मिसाइलों के साथ-साथ बैलिस्टिक मिसाइलों जैसे हवाई लक्ष्यों को बेअसर करने की क्षमता है।**

- **SAMAR:**
- **SAMAR stands for Surface to Air Missile for Assured Retaliation. It is air defence missile system.**
- **The SAMAR air defence system has been developed by Indian Air Force's 7 Base Repair Depot Tughlakabad (BRD) using its old Russian-origin air-to-air missile systems.**
- **The system can engage aerial threats with missiles operating at a speed range of 2 to 2.5 Mach.**

- समर:
- SAMAR का मतलब सुनिश्चित प्रतिशोध के लिए सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल है। यह वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली है.
- SAMAR वायु रक्षा प्रणाली को भारतीय वायु सेना के 7 बेस रिपेयर डिपो तुगलकाबाद (BRD) द्वारा अपने पुराने रूसी मूल के हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणालियों का उपयोग करके विकसित किया गया है।
- यह प्रणाली 2 से 2.5 मैक की गति सीमा पर चलने वाली मिसाइलों के साथ हवाई खतरों का सामना कर सकती है।

❖ Andaman and Nicobar Islands

- The islands are located 700 nautical miles (1,300 km) southeast of the Indian mainland.
- The Malacca Strait, the main waterway that connects the Indian Ocean to the Pacific, is less than a day's steaming from Port Blair.
- Sabang in Indonesia is 90 nautical miles southeast of Indira Point (on Great Nicobar island), and Coco Island (Myanmar) is barely 18 nautical miles from the northernmost tip of the Andamans.

❖ अंडमान व नोकोबार द्वीप समूह

- ये द्वीप भारतीय मुख्य भूमि से 700 समुद्री मील (1,300 किमी) दक्षिण-पूर्व में स्थित हैं।
- मलक्का जलडमरूमध्य, मुख्य जलमार्ग जो हिंद महासागर को प्रशांत महासागर से जोड़ता है, पोर्ट ब्लेयर से एक दिन से भी कम की दूरी पर है।
- इंडोनेशिया में सबांग, इंदिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप पर) से 90 समुद्री मील दक्षिण-पूर्व में है, और कोको द्वीप (म्यांमार) अंडमान के सबसे उत्तरी सिरे से मुश्किल से 18 समुद्री मील दूर है।

Andaman & Nicobar

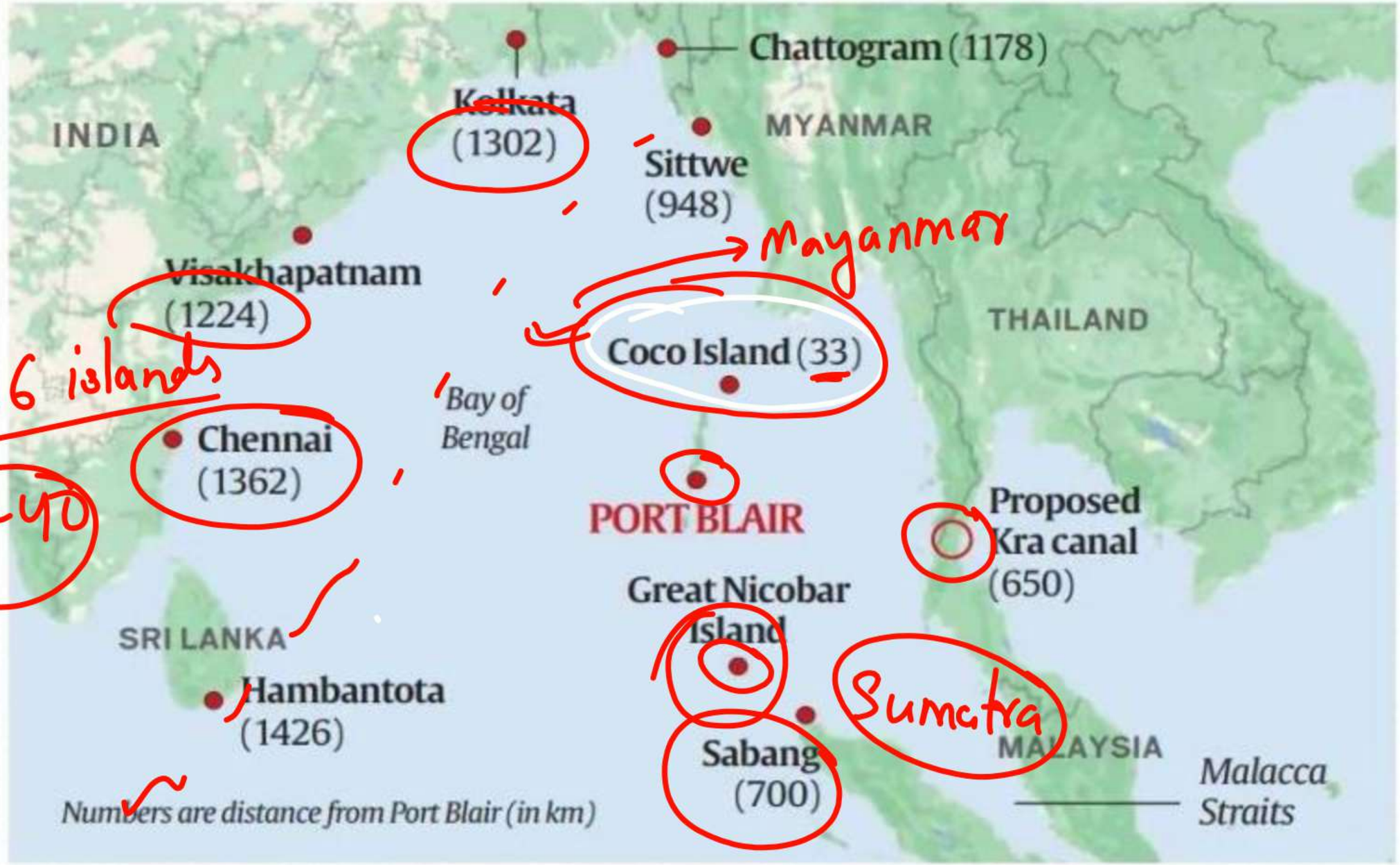
Chattogram (1178)
Kolkata (1302)
INDIA
MYANMAR
Sittwe (948)
Visakhapatnam (1224)
Coco Island (33)
THAILAND
Bay of Bengal
Chennai (1362)
PORT BLAIR
Proposed Kra canal (650)
Great Nicobar Island
SRI LANKA
Hambantota (1426)
Sabang (700)
MALAYSIA
Malacca Straits
Numbers are distance from Port Blair (in km)

Strategic

→ Malacca strait 70000/1,20,000 Ships

80% of oil trade

→ Security → 800 uninhabited island.

String of pearls

→ Act east policy.

Why it has been slow?

→ lack of political will –

→ Development vs Environment.

→ lack of connectivity.

Way forward → Aatmnirbhar A&N

→ Credible deterrence → Infra development

more presence of Navy. → Habitation of the uninhabited island.

→ Connectivity - b/w the islands / from the mainland.

0.2% of area of India

30% of Exclusive Economic Zone

❖ Andaman and Nicobar Islands

- **Why Focus on Andaman is important for us?**
- **Only 30-40 of the archipelago's 836 islands and islets are inhabited. This means there is a possibility of surreptitious occupation — a la "Kargil heights" — by a covetous neighbour.**
- **The development of this island can help India India counter China's 'String of Pearls' strategy due to its closeness to the 'Strait of Malacca' chokehold.**

❖ अंडमान व नोकोबार द्वीप समूह

- **अंडमान पर फोकस हमारे लिए क्यों जरूरी है?**
- **द्वीपसमूह के 836 द्वीपों और टापुओं में से केवल 30-40 ही बसे हुए हैं। इसका मतलब यह है कि एक लालची पड़ोसी द्वारा गुप्त रूप से - "कारगिल की पहाड़ियों" जैसे इस पर कब्ज़ा करने की संभावना है।**
- **इस द्वीप के विकास से भारत को 'मलक्का जलडमरूमध्य' के निकट होने के कारण चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति का मुकाबला करने में मदद मिल सकती है।**

❖ Andaman and Nicobar Islands

- Reportedly, nearly 70,000 out of the 1,20,000 ships sailing through the Indian Ocean pass through the 'Strait of Malacca' and the neighbouring Six Degrees channel. This is today the world's busiest trade route – Around 80 percent of the world's maritime oil trade passes through the Indian Ocean Region (IOR).
- The Andaman and Nicobar Islands constitute just 0.2 per cent of India's landmass but account for 30 per cent of the country's 200-nautical-mile Exclusive Economic Zone (EEZ)

❖ अंडमान व नोकोबार द्वीप समूह

- कथित तौर पर, हिंद महासागर से गुजरने वाले 1,20,000 जहाजों में से लगभग 70,000 'मलक्का जलडमरूमध्य' और पड़ोसी सिक्स डिग्री चैनल से होकर गुजरते हैं। यह आज दुनिया का सबसे व्यस्त व्यापार मार्ग है - दुनिया का लगभग 80 प्रतिशत समुद्री तेल व्यापार हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) से होकर गुजरता है।
- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत के भूभाग का केवल 0.2 प्रतिशत है, लेकिन देश के 200-नॉटिकल-मील विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) का 30 प्रतिशत हिस्सा है।

❖ Andaman and Nicobar Islands

- **Why Slow process?**
- **Lack of Political Will: It is fairly recently that political decision-makers have realised that the islands are strategically critical for India's security. The reasons behind the realisation include the unprecedented expansion of the PLA Navy.**
- **Distance Factor: The distance from the mainland and difficulties of developing infrastructure have been used as an excuse to delay and stall various projects**

❖ अंडमान व नोकोबार द्वीप समूह

- धीमी प्रक्रिया क्यों?
- राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी: हाल ही में राजनीतिक निर्णय निर्माताओं ने महसूस किया है कि ये द्वीप भारत की सुरक्षा के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। इस अहसास के पीछे के कारणों में पीएलए नौसेना का अभूतपूर्व विस्तार शामिल है।
- दूरी कारक: मुख्य भूमि से दूरी और बुनियादी ढांचे के विकास की कठिनाइयों का उपयोग विभिन्न परियोजनाओं में देरी और रुकावट के बहाने के रूप में किया गया है।

❖ Andaman and Nicobar Islands

- **Why Slow process?**
- **Environmental Factors: The Complex procedures for obtaining environmental clearances even for small projects have been a dampener. Regulations on the conservation of forests and native tribes have complicated issues of land acquisition.**
- **Lack of strategic Vision: The conflict between a long-term strategic vision and immediate political gains has often tilted in favour of the latter.**
- **Inter-agency coordination: The development of islands and strategic infrastructure is a multi-dimensional project involving several ministries, departments, and agencies, that presents significant coordination challenges.**

❖ अंडमान व नोकोबार द्वीप समूह

- पर्यावरणीय कारक: छोटी परियोजनाओं के लिए भी पर्यावरणीय मंजूरी प्राप्त करने की जटिल प्रक्रियाएँ निराशाजनक रही हैं। वनों और मूल जनजातियों के संरक्षण पर नियमों में भूमि अधिग्रहण के जटिल मुद्दे हैं।
- रणनीतिक दृष्टि का अभाव: दीर्घकालिक रणनीतिक दृष्टि और तत्काल राजनीतिक लाभ के बीच संघर्ष अक्सर बाद के पक्ष में झुक गया है।
- समन्वय चुनौतियां: द्वीपों और रणनीतिक बुनियादी ढांचे का विकास एक बहुआयामी परियोजना है जिसमें कई मंत्रालय, विभाग और एजेंसियां शामिल हैं, जो महत्वपूर्ण समन्वय चुनौतियां पेश करती हैं।

❖ Andaman and Nicobar Islands

- **What Needs to be done?**
- **Security: It is necessary to keep the vast area around the islands under surveillance. The security of all 836 islands, both inhabited and uninhabited, must be ensured against attempts at their occupation or use by entities engaged in unlawful activities.**
- **Credible Deterrence: A strong element of deterrence must be ensured against any naval misadventure from the East.**
- **Southern Islands Development: The infrastructure that can bolster India's maritime economy must be built on the southern group of islands that is strategically located vis-à-vis the main shipping lane from the Indian Ocean to South East Asia.**

❖ अंडमान व नोकोबार द्वीप समूह

- **क्या किये जाने की ज़रुरत है?**
- सुरक्षा: द्वीपों के आसपास के विशाल क्षेत्र को निगरानी में रखना आवश्यक है। सभी 836 द्वीपों की सुरक्षा, बसे हुए और गैर-आबादी दोनों, गैरकानूनी गतिविधियों में लगी संस्थाओं द्वारा उन पर कब्ज़ा करने या उपयोग करने के प्रयासों के खिलाफ सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- विश्वसनीय प्रतिरोधक: पूर्व से किसी भी नौसैनिक दुस्साहस के विरुद्ध प्रतिरोधक का एक मजबूत तत्व सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

❖ Andaman and Nicobar Islands

- **Ease of travel: The ease of travel to and between the islands is key. Without rapid movement of people and goods, the pace of development will remain slow. Improved transportation will help to create and sustain the tourism potential of the islands**
- **Aatamnirbhar Andaman Nicobar: The islands' dependence on mainland support, whether in respect of foodstuffs or relevant local industries that support maintenance, repair, and other services, must be reduced to the extent possible.**

❖ अंडमान व नोकोबार द्वीप समूह

- **दक्षिणी द्वीप विकास: बुनियादी ढाँचा जो भारत की समुद्री अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकता है, उसे द्वीपों के दक्षिणी समूह पर बनाया जाना चाहिए जो रणनीतिक रूप से हिंद महासागर से दक्षिण पूर्व एशिया तक मुख्य शिपिंग लेन पर स्थित है।**
- **यात्रा में आसानी: द्वीपों तक और उनके बीच यात्रा की आसानी महत्वपूर्ण है। लोगों और माल की तीव्र आवाजाही के बिना विकास की गति धीमी रहेगी। बेहतर परिवहन द्वीपों की पर्यटन क्षमता को बनाने और बनाए रखने में मदद करेगा**
- **आत्मनिर्भर अंडमान निकोबार: मुख्य भूमि के समर्थन पर द्वीपों की निर्भरता, चाहे वह खाद्य पदार्थों के संबंध में हो या रखरखाव, मरम्मत और अन्य सेवाओं का समर्थन करने वाले प्रासंगिक स्थानीय उद्योगों के संबंध में, यथासंभव कम होनी चाहिए।**

❖ Andaman and Nicobar Islands

Prelims Question:

Which one of the following pairs of islands is separated from each other by the 'Ten Degree Channel'? (2014)

(a) Andman and Nicobar Islands

(b) Nicobar and Sumatra

(c) Maldives and Lakshadweep

(d) Sumatra and Java

❖ अंडमान व नोकोबार द्वीप समूह

निम्नलिखित में से कौन सा द्वीप समूह एक दूसरे से 'टेन डिग्री चैनल' द्वारा अलग होता है? (2014)

(a) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

(b) निकोबार और सुमात्रा

(c) मालदीव और लक्षद्वीप

(d) सुमात्रा और जावा

Barren island

10° A / N

9° Lak

8° Lakshadweep/Minicoy

Maldives

8° M.

Mahad Satyagraha

- The Mahad Satyagraha, also known as the Chavdar Tale (Lake) Satyagraha, was a landmark event in the Dalit movement.
- It took place on March 20, 1927 in Mahad, Raigad District of Maharashtra.
- The Satyagraha was led by B. R. Ambedkar and aimed to establish the right of untouchables to use water from a public tank
- In 1937, the Bombay High Court ruled in favor of untouchables' right to use tank water.
- March 20 is observed as Social Empowerment day in India to commemorate the Mahad Satyagraha

❖ महड़ सत्याग्रह

- महाड़ सत्याग्रह, जिसे चवदार टेल (झील) सत्याग्रह के नाम से भी जाना जाता है, दलित आंदोलन में एक ऐतिहासिक घटना थी।
- यह 20 मार्च, 1927 को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के महाड में हुआ था।
- सत्याग्रह का नेतृत्व बीआर अंबेडकर ने किया था और इसका उद्देश्य सार्वजनिक टैंक से पानी का उपयोग करने के लिए अछूतों का अधिकार स्थापित करना था।
- 1937 में, बॉम्बे हाई कोर्ट ने अछूतों के टैंक के पानी के उपयोग के अधिकार के पक्ष में फैसला सुनाया।
- महाड़ सत्याग्रह की स्मृति में 20 मार्च को भारत में सामाजिक अधिकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है

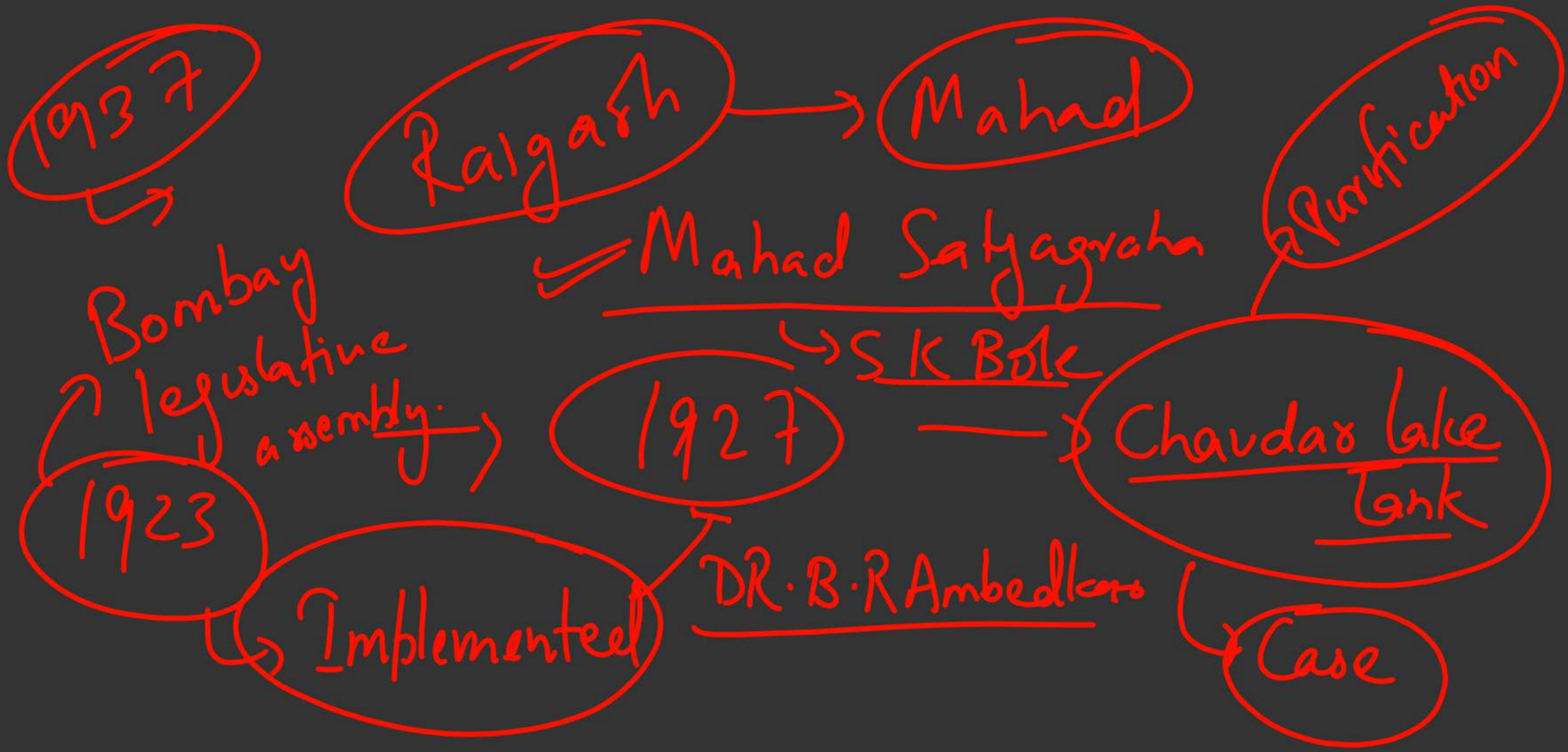
1937
Raigarh
Mahad
Purification
Mahad Satyagraha
S K Bole
Bombay legislative assembly
1923
1927
Chavdar lake Tank
Implemented
DR. B. R Ambedkar
Case

Mahad Satyagraha

- What happened during Satyagraha?
- On 4 August 1923, SK Bole, a social reformer, moved a resolution in the Bombay Legislative Council, which provided that "the council recommends that the untouchable classes be allowed to use all public watering places, in dharamshala which are built and maintained out of public funds administered by parties appointed by government or created by statute, as well as public schools, courts, offices and dispensaries."

❖ महड़ सत्याग्रह

- सत्याग्रह के दौरान क्या हुआ?
- 4 अगस्त 1923 को, समाज सुधारक एसके बोले ने बॉम्बे विधान परिषद में एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें प्रावधान किया गया कि "परिषद सिफारिश करती है कि अछूत वर्गों को धर्मशालाओं में सभी सार्वजनिक जल स्थानों का उपयोग करने की अनुमति दी जानी चाहिए, जो " सार्वजनिक धन सरकार द्वारा नियुक्त पार्टियों द्वारा या क़ानून द्वारा निर्मित, साथ ही सार्वजनिक स्कूलों, अदालतों, कार्यालयों और औषधालयों द्वारा प्रशासित किया जाता है।

Mahad Satyagraha

- Following the resolution, a direction was issued by the Bombay government to the heads of all the departments on 11 September 1923 to give effect to the resolution so far as it relates to the public places and editions, belonging to and maintained by the government.
- Thereafter, the Mahad Municipality passed a resolution to open the Chavdar tank for the Depressed Classes.
- However, the municipality's resolution could not be implemented, as the Depressed Classes were unable to access water from the Chavdar tank due to opposition from the oppressor castes of that area.
- To overcome the denial of rights, the Kolaba District Depressed Classes in coordination with Dr Ambedkar and Bahiskrit Hitkarini Sabha decided to hold a conference in Mahad on 19-20 March 1927.

❖ महड़ सत्याग्रह

- संकल्प के बाद, बॉम्बे सरकार द्वारा 11 सितंबर 1923 को सभी विभागों के प्रमुखों को एक निर्देश जारी किया गया था कि जहां तक यह सरकार से संबंधित और रखरखाव वाले सार्वजनिक स्थानों और संस्करणों से संबंधित है, संकल्प को प्रभावी बनाया जाए।
- इसके बाद, महाड नगर पालिका ने दलित वर्गों के लिए चावदार टैंक खोलने का प्रस्ताव पारित किया।
- हालाँकि, नगर पालिका के प्रस्ताव को लागू नहीं किया जा सका, क्योंकि उस क्षेत्र की उत्पीड़क जातियों के विरोध के कारण दलित वर्ग चावदार टैंक से पानी लेने में असमर्थ थे।
- अधिकारों के हनन पर काबू पाने के लिए कोलाबा जिला दलित वर्ग ने डॉ. अम्बेडकर और बहिष्कृत हितकारिणी सभा के समन्वय से 19-20 मार्च 1927 को महाड में एक सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया।

Mahad Satyagraha

- Consequently, thousands of members of the Depressed Classes gathered in Mahad to participate in the Satyagraha. On March 20, 1927, Dr. Ambedkar and his followers marched to the Chavdar Lake, where he drank water from it, asserting their right of equality and equal access to public resources.
- This act sent shockwaves through the conservative society. The oppressor castes even performed a purification ritual of the tank, which according to them had been defiled by the touch of the Untouchables.
- Under pressure from the oppressor castes, the Mahad Municipality on 4 August 1927 revoked its resolution of 1924 under which it had declared the Chavdar Tank open to the Depressed Classes.

❖ महड़ सत्याग्रह

- परिणामस्वरूप, दलित वर्ग के हजारों सदस्य सत्याग्रह में भाग लेने के लिए महाड में एकत्र हुए। 20 मार्च, 1927 को, डॉ. अंबेडकर और उनके अनुयायियों ने समानता के अधिकार और सार्वजनिक संसाधनों तक समान पहुंच का दावा करते हुए, चावदार झील तक मार्च किया, जहां उन्होंने इसका पानी पिया।
- इस कृत्य से रुढ़िवादी समाज में भूचाल आ गया। उत्पीड़क जातियों ने तालाब का शुद्धिकरण अनुष्ठान भी किया, जो उनके अनुसार अछूतों के स्पर्श से अपवित्र हो गया था।
- उत्पीड़क जातियों के दबाव में, महाड नगर पालिका ने 4 अगस्त 1927 को 1924 के अपने प्रस्ताव को रद्द कर दिया, जिसके तहत उसने चावदार टैंक को दलित वर्गों के लिए खुला घोषित किया था।

Mahad Satyagraha

- Dr Ambedkar then decided to launch another Satyagraha in December 1927 in Mahad to assert the rights of the Depressed Classes. However, the oppressor castes initiated a legal action against Dr. Ambedkar and his colleagues on 12 December 1927 in the Mahad civil court, seeking issuance of a temporary injunction.
- On 14 December, the court granted a temporary injunction, which prohibited Dr. Ambedkar, his colleagues, and members of the Depressed Classes or those acting on their behalf, from accessing the Chavdar Tank until further orders were issued.
- Dr. Ambedkar however decided to continue his proposed Satyagraha during 25-27 December, even though he decided to not go to the Tank till the pendency of the civil suit.

❖ महड़ सत्याग्रह

- इसके बाद डॉ. अंबेडकर ने दलित वर्गों के अधिकारों की मांग के लिए दिसंबर 1927 में महाड में एक और सत्याग्रह शुरू करने का फैसला किया। हालाँकि, उत्पीड़क जातियों ने अस्थायी निषेधाज्ञा जारी करने की मांग करते हुए 12 दिसंबर 1927 को महाड सिविल कोर्ट में डॉ. अम्बेडकर और उनके सहयोगियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू की।
- 14 दिसंबर को, अदालत ने एक अस्थायी निषेधाज्ञा दी, जिसने डॉ. अंबेडकर, उनके सहयोगियों और दलित वर्गों के सदस्यों या उनकी ओर से कार्य करने वालों को अगले आदेश जारी होने तक चवदार टैंक तक पहुंचने से रोक दिया।

Mahad Satyagraha

- In the civil suit, the defendants including Dr Ambedkar argued that the tank belonged to the Mahad Municipality and should be open to all.
- The trial court ruled against the plaintiffs, stating that they failed to prove a longstanding custom excluding untouchables from using the tank, and that this custom did not qualify as a legal right. The case was dismissed in 1937.

❖ महड़ सत्याग्रह

- हालाँकि, डॉ. अम्बेडकर ने 25-27 दिसंबर के दौरान अपना प्रस्तावित सत्याग्रह जारी रखने का फैसला किया, भले ही उन्होंने सिविल मुकदमे के लंबित रहने तक टैंक पर नहीं जाने का फैसला किया।
- सिविल मुकदमे में, डॉ. अंबेडकर सहित प्रतिवादियों ने तर्क दिया कि टैंक महाड नगर पालिका का है और सभी के लिए खुला होना चाहिए।
- ट्रायल कोर्ट ने वादी के खिलाफ फैसला सुनाया, जिसमें कहा गया कि वे अछूतों को टैंक का उपयोग करने से बाहर करने की एक लंबे समय से चली आ रही प्रथा को साबित करने में विफल रहे, और यह प्रथा कानूनी अधिकार के रूप में योग्य नहीं थी। 1937 में मामला ख़ारिज कर दिया गया।

Mahad Satyagraha

B.R. Ambedkar was elected to the Constituent Assembly from: [1996]

a) West Bengal

b) The Bombay Presidency

c) The then Madhya Bharat

d) Punjab

❖ महड़ सत्याग्रह

बी.आर.अंबेडकर संविधान सभा के लिए चुने गए : [1996]

a) पश्चिम बंगाल

b) बॉम्बे प्रेसीडेंसी

c) तत्कालीन मध्यभारत

d) पंजाब

Mahad Satyagraha

Which one of the following rights was described by Dr B R Ambedkar as the heart and soul of the Constitution? [2002]

a) Right to freedom of religion

b) Right to property

c) Right to equality

d) Right to Constitutional remedies

❖ महड़ सत्याग्रह

निम्नलिखित में से किस अधिकार को डॉ. बीआर अंबेडकर ने संविधान का हृदय और आत्मा बताया था? [2002]

a) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार

b) संपत्ति का अधिकार

c) समानता का अधिकार

d) संवैधानिक उपचारों का अधिकार

Places in News: Mount Ruang

- Mount Ruang, situated on the northern side of Sulawesi Island, experienced at least five significant eruptions recently.
- Indonesia, with a population of 270 million, is home to 120 active volcanoes.
- The country is susceptible to volcanic activity due to its location along the Ring of Fire, which is a horseshoe-shaped series of seismic fault lines around the Pacific Ocean.
- In Indonesia, volcanic eruptions have historically led to tsunamis.
- For example, in 1871, an eruption at Mount Ruang and the 2018 eruption of the Anak Krakatau volcano resulted in tragic consequences.
- "Parts of the Anak Krakatau mountain fell into the ocean," causing a tsunami that claimed 430 lives along the coasts of Sumatra and Java islands.

❖ समाचार में स्थान: माउंट रुआंग

- सुलावेसी द्वीप के उत्तरी किनारे पर स्थित माउंट रुआंग में हाल ही में कम से कम पांच महत्वपूर्ण विस्फोट हुए हैं।
- 270 मिलियन की आबादी वाला इंडोनेशिया 120 सक्रिय ज्वालामुखियों का घर है।
- यह देश रिंग ऑफ फायर के किनारे स्थित होने के कारण ज्वालामुखी गतिविधि के लिए अतिसंवेदनशील है, जो प्रशांत महासागर के चारों ओर भूकंपीय दोष रेखाओं की एक घोड़े की नाल के आकार की श्रृंखला है।
- इंडोनेशिया में, ज्वालामुखी विस्फोट ऐतिहासिक रूप से सुनामी का कारण बने हैं।
- उदाहरण के लिए, 1871 में माउंट रुआंग में विस्फोट और 2018 में अनाक क्राकाटाऊ ज्वालामुखी के विस्फोट के दुखद परिणाम हुए।
- "अनक क्राकाटाऊ पर्वत के कुछ हिस्से समुद्र में गिर गए," जिससे सुनामी आई जिसने सुमात्रा और जावा द्वीपों के तटों पर 430 लोगों की जान ले ली।

4th Mass Coral bleaching.

Coral Reefs

Zooxanthellae – Algae

Coral polyps.

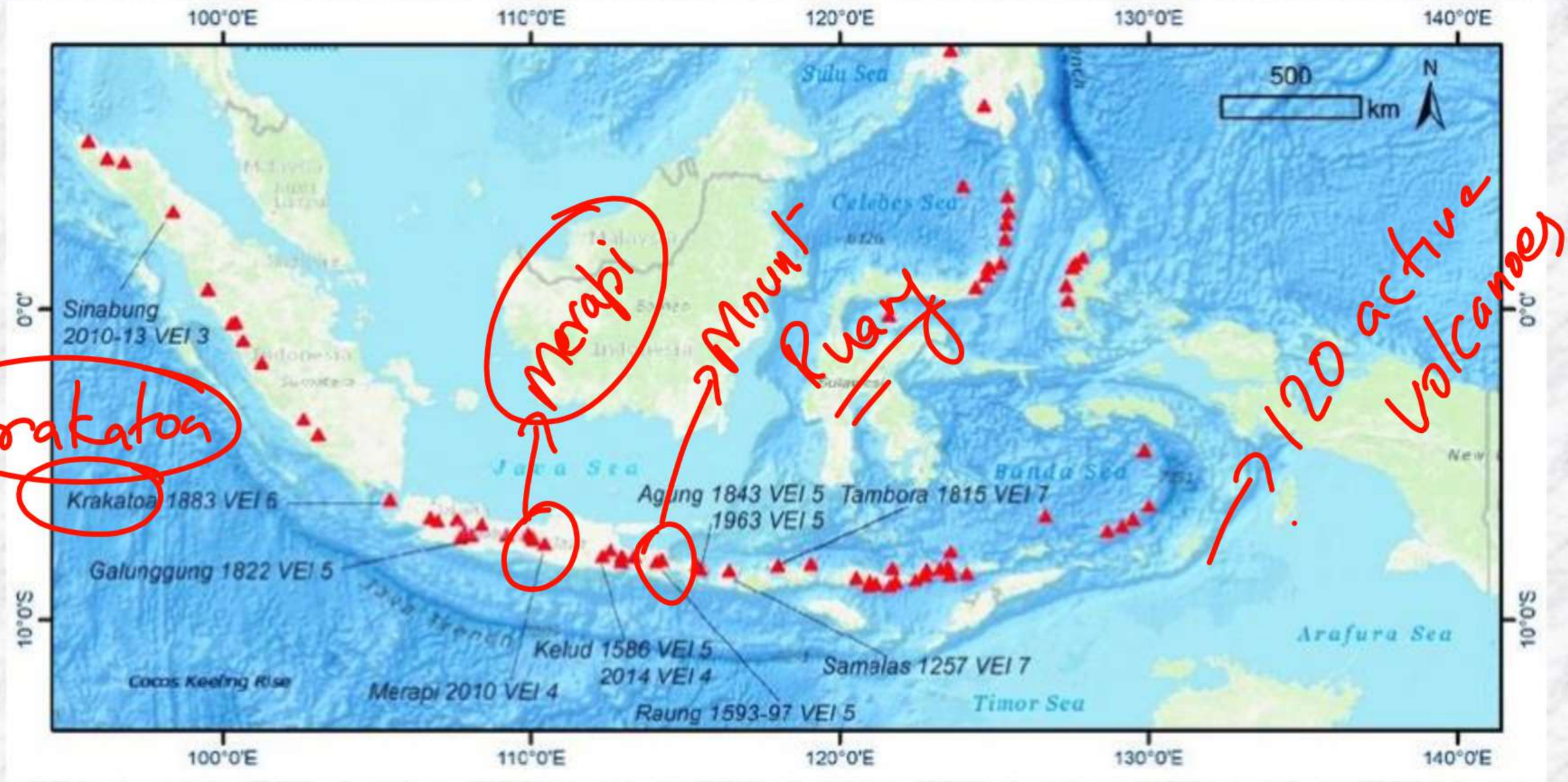
100°0'E
110°0'E
120°0'E
130°0'E
140°0'E
0°0'
10°0'S
500
km
N
Sulu Sea
Celebes Sea
Java Sea
Banda Sea
Arafura Sea
Timor Sea
Cocos Keeling Rise
Sinabung 2010-13 VEI 3
Krakatoa 1883 VEI 6
Galunggung 1822 VEI 5
Merapi 2010 VEI 4
Kelud 1586 VEI 5
2014 VEI 4
Agung 1843 VEI 5
1963 VEI 5
Raung 1593-97 VEI 5
Tambora 1815 VEI 7
Samalas 1257 VEI 7
Krakatoa
Merapi
Mount Ruang
120 active Volcanoes

Ring of Fire:

- The Ring of Fire is a string of volcanoes and sites of seismic activity, or earthquakes, around the edges of the Pacific Ocean.
- Roughly 90 percent of all earthquakes occur along the Ring of Fire, and the ring is dotted with 75 percent of all active volcanoes on Earth.
- The Ring of Fire isn't quite a circular ring. It is shaped more like a 40,000-kilometer (25,000-mile) horseshoe.
- A string of 452 volcanoes stretches from the southern tip of South America, up along the coast of North America, across the Bering Strait, down through Japan, and into New Zealand.

❖ रिंग ऑफ फायर

- रिंग ऑफ फायर प्रशांत महासागर के किनारों के आसपास ज्वालामुखियों और भूकंपीय गतिविधि, या भूकंप के स्थलों की एक श्रृंखला है।
- सभी भूकंपों में से लगभग 90 प्रतिशत भूकंप रिंग ऑफ फायर के आसपास आते हैं, और यह रिंग पृथ्वी पर सभी सक्रिय ज्वालामुखियों में से 75 प्रतिशत से युक्त है।
- रिंग ऑफ फायर बिल्कुल गोलाकार वलय नहीं है। इसका आकार 40,000 किलोमीटर (25,000 मील) घोड़े की नाल जैसा है।
- 452 ज्वालामुखियों की एक श्रृंखला दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी सिरे से लेकर उत्तरी अमेरिका के तट तक, बेरिंग जलडमरूमध्य के पार, जापान से होते हुए न्यूजीलैंड तक फैली हुई है।

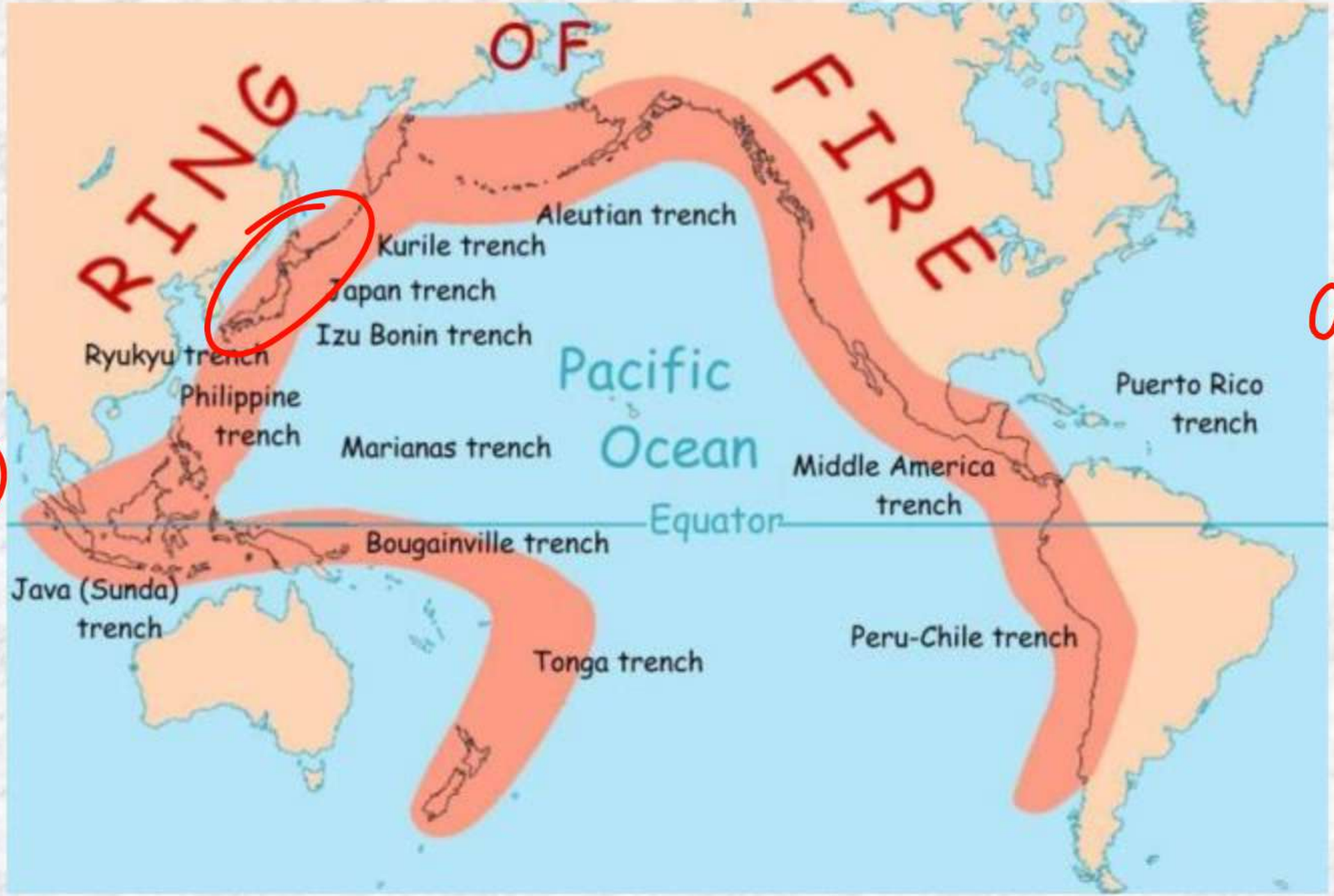

0·2 mins

90% Earthquake

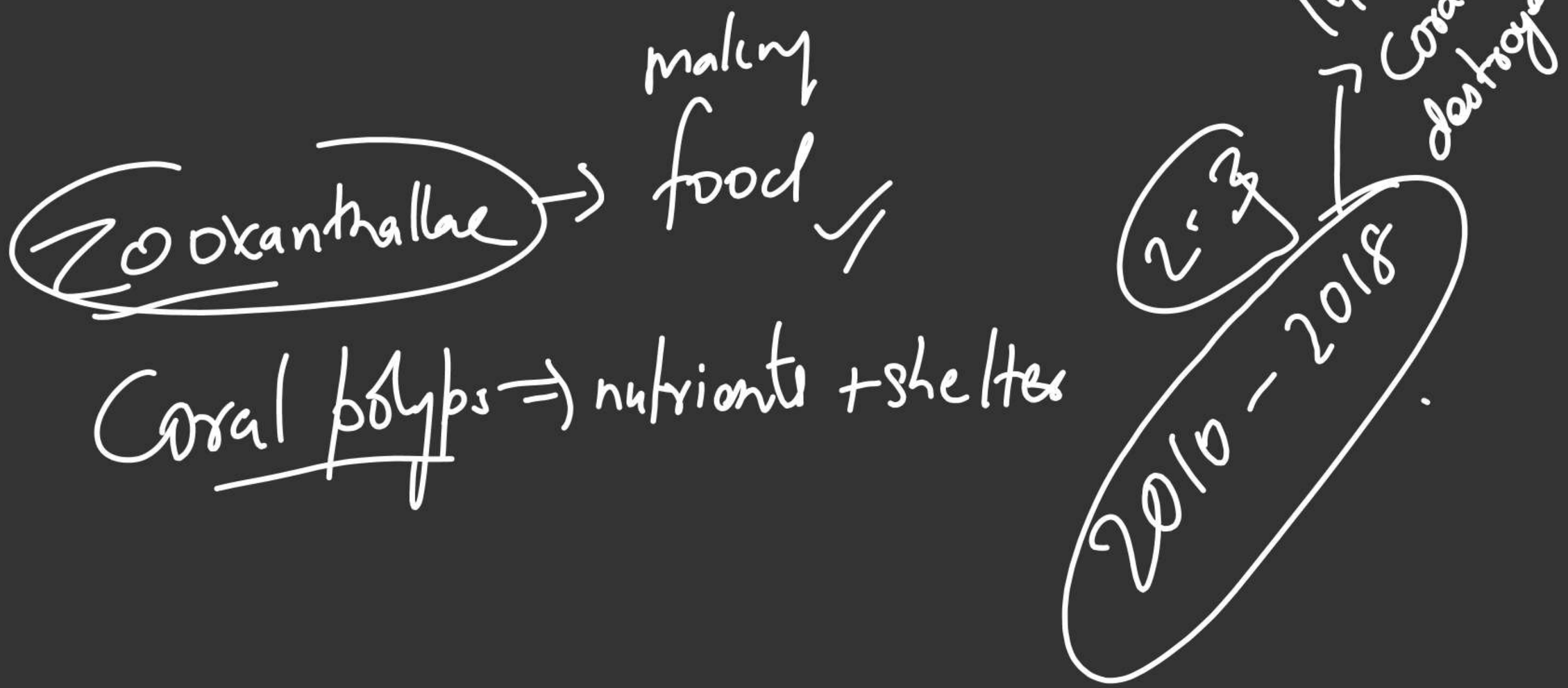

making

Zooxanthallae → food ✓

Coral polyps ⇒ nutrients + shelter

2:3 → 14% Coral Reef destroyed.

2010 – 2018

Ring of Fire:

- Jolting Japan
- The island nation of Japan lies along the western edge of the Ring of Fire, and is one of the most tectonically active places on Earth.
- As much as 10 percent of the world's volcanic activity takes place in Japan.

❖ रिंग ऑफ फायर

- जापान का द्वीप राष्ट्र रिंग ऑफ फायर के पश्चिमी किनारे पर स्थित है, और पृथ्वी पर सबसे अधिक विवर्तनिक रूप से सक्रिय स्थानों में से एक है।
- विश्व की लगभग 10 प्रतिशत ज्वालामुखीय गतिविधियाँ जापान में होती हैं।

Fourth Global Mass Coral bleaching

- The fourth global mass coral bleaching event has been triggered by extraordinary ocean temperatures, as per the US National Oceanic and Atmospheric Administration (NOAA).
- Corals Significance:
- More than 500 million people across the world depend on coral reefs for food, income and coastal protection from storms and floods.
- Coral reefs can absorb up to 97% of the energy from waves, storms, and floods, which prevents loss of life, property damage, and soil erosion.

❖ चौथा ग्लोबल मास कोरल ब्लीचिंग

- यूएस नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एनओएए) के अनुसार, चौथी वैश्विक सामूहिक कोरल ब्लीचिंग घटना असाधारण समुद्री तापमान के कारण शुरू हुई है।
- कोरल का महत्व:
- दुनिया भर में 500 मिलियन से अधिक लोग भोजन, आय और तूफानों और बाढ़ से तटीय सुरक्षा के लिए प्रवाल शैल-श्रेणी पर निर्भर हैं।
- प्रवाल शैल-श्रेणीलहरों, तूफानों और बाढ़ से 97% तक ऊर्जा अवशोषित कर सकती हैं, जो जीवन की हानि, संपत्ति की क्षति और मिट्टी के कटाव को रोकती है।

Fourth Global Mass Coral bleaching

- Why it has happened?
- Since mid-March 2023, the average sea surface temperature (SST) has been abnormally high.
- In March this year, it reached a record monthly high of 21.07 degree Celsius, according to the EU Copernicus Climate Change Service (C3S).
- The primary reason behind the soaring temperatures is the rising emissions of heat-trapping greenhouse gases (GHGs) such as carbon dioxide and methane in the atmosphere.
- Nearly 90% of the extra heat trapped by GHGs has been absorbed by the oceans — that is why they have become so warm.

❖ चौथा ग्लोबल मास कोरल ब्लीचिंग

- ऐसा क्यों हुआ है?
- मार्च 2023 के मध्य से, औसत समुद्री सतह तापमान (एसएसटी) असामान्य रूप से उच्च रहा है।
- ईयू कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस (सी3एस) के अनुसार, इस साल मार्च में यह 21.07 डिग्री सेल्सियस के रिकॉर्ड मासिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गया।
- बढ़ते तापमान के पीछे प्राथमिक कारण वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ताप-रोधी ग्रीनहाउस गैसों (जीएचजी) का बढ़ता उत्सर्जन है।
- जीएचजी द्वारा फंसी अतिरिक्त गर्मी का लगभग 90% महासागरों द्वारा अवशोषित कर लिया गया है - यही कारण है कि वे इतने गर्म हो गए हैं।

Fourth Global Mass Coral bleaching

- Impact of warming of Oceans
- 1. The warmer oceans lead to an increase in ocean stratification — the natural separation of an ocean's water into horizontal layers by density, with warmer, lighter, less salty, and nutrient-poor water layering on top of heavier, colder, saltier, nutrient-rich water. Usually, ocean ecosystems, currents, wind, and tides mix these layers.
- The rise in temperatures, however, has made it harder for water layers to mix with each other. Due to this, oceans are able to absorb less carbon dioxide from the atmosphere and the oxygen absorbed isn't able to mix properly with cooler ocean waters below, threatening the survival of marine life.

❖ चौथा ग्लोबल मास कोरल ब्लीचिंग

- महासागरों के गर्म होने का प्रभाव
- 1. गर्म महासागरों के कारण महासागरीय स्तरीकरण में वृद्धि होती है - घनत्व के आधार पर समुद्र के पानी को क्षैतिज परतों में प्राकृतिक रूप से अलग किया जाता है, जिसमें भारी, ठंडे, नमकीन, पोषक तत्वों के ऊपर गर्म, हल्का, कम नमकीन और पोषक तत्वों की कमी वाले पानी की परत होती है। -समृद्ध पानी. आमतौर पर, समुद्री पारिस्थितिक तंत्र, धाराएँ, हवा और ज्वार इन परतों को मिलाते हैं।
- हालाँकि, तापमान में वृद्धि ने पानी की परतों का एक-दूसरे के साथ मिश्रण करना कठिन बना दिया है। इसके कारण, महासागर वायुमंडल से कम कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने में सक्षम होते हैं और अवशोषित ऑक्सीजन नीचे ठंडे महासागर के पानी के साथ ठीक से मिश्रित नहीं हो पाती है, जिससे समुद्री जीवन के अस्तित्व को खतरा होता है।

Fourth Global Mass Coral bleaching

- 2. Nutrients are also not able to travel up to the surface of the oceans from below. This could threaten the population of phytoplankton — single-celled plants that thrive on the ocean surface and are the base of several marine food webs. Phytoplankton are eaten by zooplankton, which are consumed by other marine animals such as crabs, fish, and sea stars. Therefore, if the phytoplankton population plummets, there could be a collapse of marine ecosystems.

❖ चौथा ग्लोबल मास कोरल ब्लीचिंग

- 2. पोषक तत्व भी नीचे से महासागरों की सतह तक नहीं पहुंच पाते हैं। इससे फाइटोप्लांकटन की आबादी को खतरा हो सकता है - एकल-कोशिका वाले पौधे जो समुद्र की सतह पर पनपते हैं और कई समुद्री खाद्य जालों का आधार हैं। फाइटोप्लांकटन को ज़ोप्लांकटन द्वारा खाया जाता है, जिसे अन्य समुद्री जानवर जैसे केकड़े, मछली और समुद्री तारे खाते हैं। इसलिए, यदि फाइटोप्लांकटन की आबादी कम हो जाती है, तो समुद्री पारिस्थितिक तंत्र का पतन हो सकता है।

Fourth Global Mass Coral bleaching

- 3. Warmer oceans cause marine heat waves (MHWs), which occur when the surface temperature of a particular region of the sea rises to 3 or 4 degree Celsius above the average temperature for at least five days. Between 1982 and 2016, such heatwaves have doubled in frequency and have become longer and more intense, according to a 2021 study by the UN's Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC).
- MHWs are devastating for marine ecosystems as they contribute to coral bleaching, which reduces the reproductivity of corals and makes them more vulnerable to life-threatening diseases. They also impact the migration pattern of aquatic animals.

❖ चौथा ग्लोबल मास कोरल ब्लीचिंग

- 3. गर्म महासागर समुद्री गर्मी तरंगों (एमएचडब्ल्यू) का कारण बनते हैं, जो तब होती है जब समुद्र के किसी विशेष क्षेत्र की सतह का तापमान कम से कम पांच दिनों के लिए औसत तापमान से 3 या 4 डिग्री सेल्सियस ऊपर बढ़ जाता है। संयुक्त राष्ट्र के इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) के 2021 के एक अध्ययन के अनुसार, 1982 और 2016 के बीच, ऐसी हीटवेव की आवृत्ति दोगुनी हो गई है और लंबी और अधिक तीव्र हो गई है।
- एमएचडब्ल्यू समुद्री पारिस्थितिक तंत्र के लिए विनाशकारी हैं क्योंकि वे मूंगा विरंजन में योगदान करते हैं, जो मूंगों की प्रजनन क्षमता को कम करता है और उन्हें जीवन-घातक बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है। वे जलीय जंतुओं के प्रवासन पैटर्न को भी प्रभावित करते हैं।

Fourth Global Mass Coral bleaching

- 4. According to several studies, higher ocean temperatures may also result in more frequent and more intense storms like hurricanes and cyclones. Warmer temperatures lead to a higher rate of evaporation as well as the transfer of heat from the oceans to the air. That's why, when storms travel across hot oceans, they gather more water vapour and heat. This results in more powerful winds, heavier rainfall, and more flooding when storms reach the land — meaning heightened devastation for humans.

❖ चौथा ग्लोबल मास कोरल ब्लीचिंग

- 4. कई अध्ययनों के अनुसार, उच्च समुद्र के तापमान के कारण तूफान और चक्रवात जैसे अधिक बार और अधिक तीव्र तूफान भी आ सकते हैं। गर्म तापमान से वाष्पीकरण की उच्च दर के साथ-साथ महासागरों से हवा में गर्मी का स्थानांतरण होता है। इसीलिए, जब तूफान गर्म महासागरों में यात्रा करते हैं, तो वे अधिक जलवाष्प और गर्मी एकत्र करते हैं। इसके परिणामस्वरूप अधिक शक्तिशाली हवाएं, भारी वर्षा और जब तूफान भूमि पर पहुंचते हैं तो अधिक बाढ़ आती है - जिसका अर्थ है मनुष्यों के लिए भारी तबाही।

Fourth Global Mass Coral bleaching

- Mass Coral Bleaching:
- Global mass bleaching of coral reefs is when significant coral bleaching is confirmed in the Atlantic, Indian and Pacific oceans
- Such events are a relatively new phenomenon.
- The first one took place in 1998 in which 20% of the world's reef areas suffered bleaching-level heat stress.
- The next two global bleaching events occurred in 2010 (35% of reefs affected) and between 2014 and 2017 (56% of reefs affected)

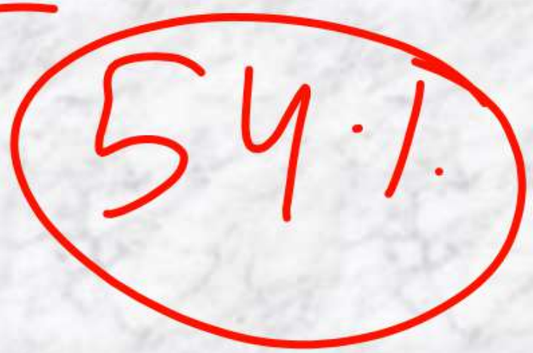

❖ चौथा ग्लोबल मास कोरल ब्लीचिंग

- बड़े पैमाने पर मूंगा विरंजन:
- प्रवाल भित्तियों का वैश्विक स्तर पर बड़े पैमाने पर विरंजन तब होता है जब अटलांटिक, भारतीय और प्रशांत महासागरों में महत्वपूर्ण प्रवाल विरंजन की पुष्टि की जाती है
- ऐसी घटनाएँ अपेक्षाकृत नई घटना हैं।
- पहली घटना 1998 में हुई थी जिसमें दुनिया के 20% रीफ क्षेत्रों को ब्लीचिंग स्तर के ताप तनाव का सामना करना पड़ा था।
- अगली दो वैश्विक ब्लीचिंग घटनाएं 2010 में हुईं (35% चट्टानें प्रभावित हुईं) और 2014 और 2017 के बीच (56% चट्टानें प्रभावित हुईं)

Coral Reefs

→ less than 2% of Oceans ⇒ supporting 25% of marine biodiversity
  ⇌
→ 500 million people globally depend on Coral.

Cyclones → frequent / Intense

Why ?

→ Ocean temp ↗ 2°C

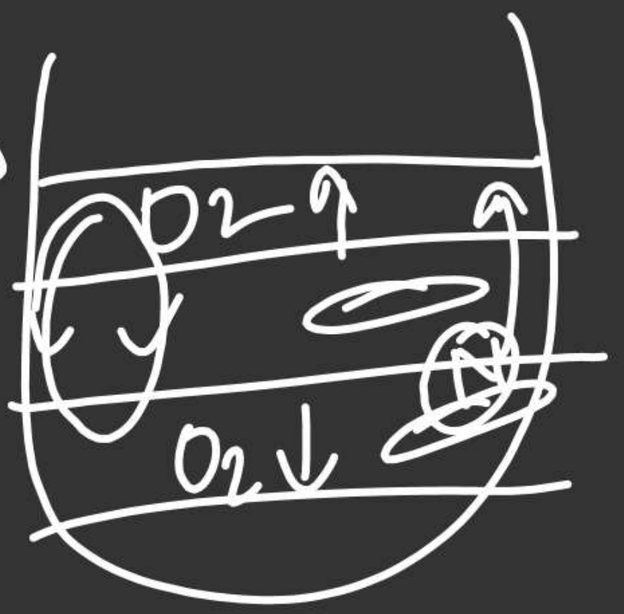

Acidification

→ less nutrient at top

→ lesser amount of O2

→ 90% of heat absorbed by oceans.

→ Stratification will become rigid

Fourth Global Mass Coral bleaching

- It has been confirmed that the fourth global bleaching event is currently underway. Nearly 54 countries, territories and local economies — from Florida, the US, Saudi Arabia to Fiji — have confirmed bleaching.
- About a third of the reefs surveyed by air showed prevalence of very high or extreme bleaching, and at least three quarters showed some bleaching
- In total, more than 54% of the world's coral area has experienced bleaching-level heat stress in the past year, and that number is increasing by about 1% per week

❖ चौथा ग्लोबल मास कोरल ब्लीचिंग

- यह पुष्टि की गई है कि चौथा वैश्विक ब्लीचिंग कार्यक्रम वर्तमान में चल रहा है। फ्लोरिडा, अमेरिका, सऊदी अरब से लेकर फिजी तक लगभग 54 देशों, क्षेत्रों और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं ने ब्लीचिंग की पुष्टि की है।
- वायु द्वारा सर्वेक्षण किए गए लगभग एक तिहाई भित्तियों में बहुत अधिक या अत्यधिक ब्लीचिंग की व्यापकता देखी गई, और कम से कम तीन चौथाई में कुछ ब्लीचिंग दिखाई दी
- कुल मिलाकर, दुनिया के 54% से अधिक प्रवाल क्षेत्र ने पिछले वर्ष में ब्लीचिंग-स्तर के ताप तनाव का अनुभव किया है, और यह संख्या प्रति सप्ताह लगभग 1% बढ़ रही है।

Giant rogue waves

- Rogues, called 'extreme storm waves' by scientists, are those waves which are greater than twice the size of surrounding waves, are very unpredictable, and often come unexpectedly from directions other than prevailing wind and waves.
- Most reports of extreme storm waves say they look like "walls of water." They are often steep-sided with unusually deep troughs.
- Since these waves are uncommon, measurements and analysis of this phenomenon is extremely rare. Exactly how and when rogue waves form is still under investigation, but there are several known causes:

❖ विशाल दुष्ट लहरें

- दुष्ट लहरें, जिन्हें वैज्ञानिक 'अत्यधिक तूफ़ानी तरंगें' कहते हैं, वे तरंगें हैं जो आसपास की तरंगों के आकार से दोगुने से भी अधिक बड़ी होती हैं, बहुत अप्रत्याशित होती हैं, और अक्सर प्रचलित हवा और लहरों के अलावा अन्य दिशाओं से अप्रत्याशित रूप से आती हैं।
- अत्यधिक तूफानी लहरों की अधिकांश रिपोर्टों में कहा गया है कि वे "पानी की दीवारों" की तरह दिखती हैं। वे अक्सर असामान्य रूप से गहरे गर्तों के साथ खड़ी ढलान वाले होते हैं।
- चूँकि ये तरंगें असामान्य हैं, इसलिए इस घटना का माप और विश्लेषण अत्यंत दुर्लभ है। वास्तव में दुष्ट तरंगें कैसे और कब बनती हैं, इसकी अभी भी जांच चल रही है, लेकिन इसके कई ज्ञात कारण हैं:

>100 FT
~31 M

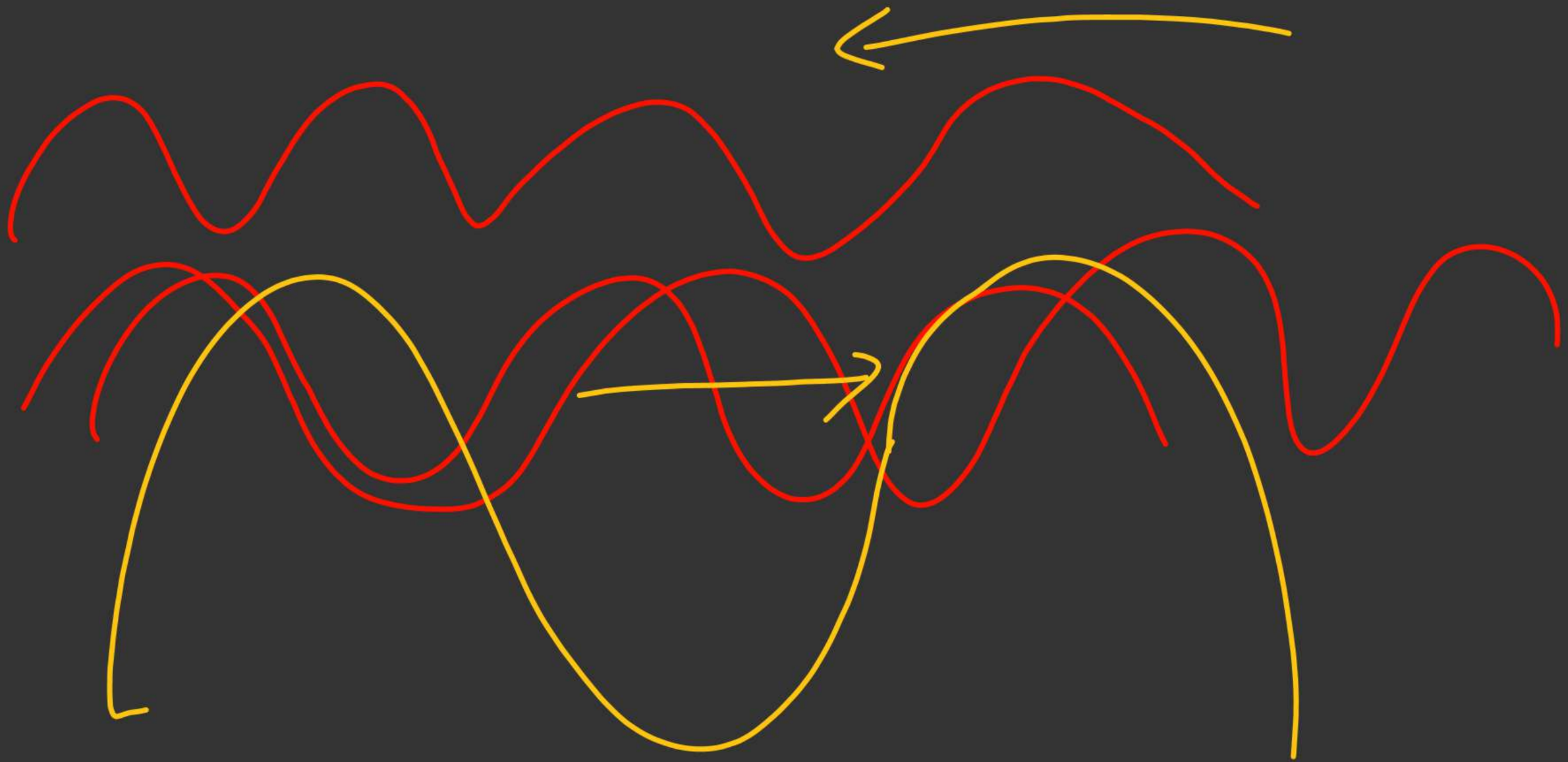

Giant rogue waves

- **Constructive interference. Extreme waves often form because swells, while traveling across the ocean, do so at different speeds and directions. As these swells pass through one another, their crests, troughs, and lengths sometimes coincide and reinforce each other. This process can form unusually large, towering waves that quickly disappear. If the swells are travelling in the same direction, these mountainous waves may last for several minutes before subsiding.**

❖ विशाल दुष्ट लहरें

- अत्यधिक लहरें अक्सर इसलिए बनती हैं क्योंकि समुद्र के पार यात्रा करते समय लहरें अलग-अलग गति और दिशाओं से आती हैं। जैसे-जैसे ये उभार एक-दूसरे से होकर गुजरते हैं, उनके शिखर, गर्त और लंबाई कभी-कभी मेल खाते हैं और एक-दूसरे को मजबूत करते हैं। यह प्रक्रिया असामान्य रूप से बड़ी, ऊंची लहरें बना सकती है जो तुरंत गायब हो जाती हैं। यदि लहरें एक ही दिशा में चल रही हैं, तो ये पहाड़ी लहरें कम होने से पहले कई मिनट तक चल सकती हैं।

Terms in News: Shrinkflation

- Shrinkflation is a practice where companies reduce the size or quantity of a product while keeping the price the same.
- The term is a combination of the words "shrink" and "inflation"
- Shrinkflation is also known as package downsizing or weight-out.
- It's a type of inflation that can happen without people noticing
- Companies may use shrinkflation for a number of reasons, including: Rising production costs, Market competition, Maintaining market share, and Boosting or maintaining profit margins

❖ संकुचन मुद्रास्फीति/सिकुड़न मुद्रास्फीति

- सिकुड़न मुद्रास्फीति एक ऐसी प्रथा है जहां कंपनियां कीमत को समान रखते हुए किसी उत्पाद का आकार या मात्रा कम कर देती हैं।
- यह शब्द "सिकुड़न" और "मुद्रास्फीति" शब्दों का एक संयोजन है
- सिकुड़न मुद्रास्फीति को पैकेज डाउनसाइजिंग या वेट-आउट के रूप में भी जाना जाता है।
- यह एक प्रकार की मुद्रास्फीति है जो लोगों को पता चले बिना भी हो सकती है
- कंपनियां कई कारणों से सिकुड़न मुद्रास्फीति का उपयोग कर सकती हैं, जिनमें शामिल हैं: बढ़ती उत्पादन लागत, बाजार प्रतिस्पर्धा, बाजार हिस्सेदारी बनाए रखना, और लाभ मार्जिन को बढ़ावा देना या बनाए रखना।

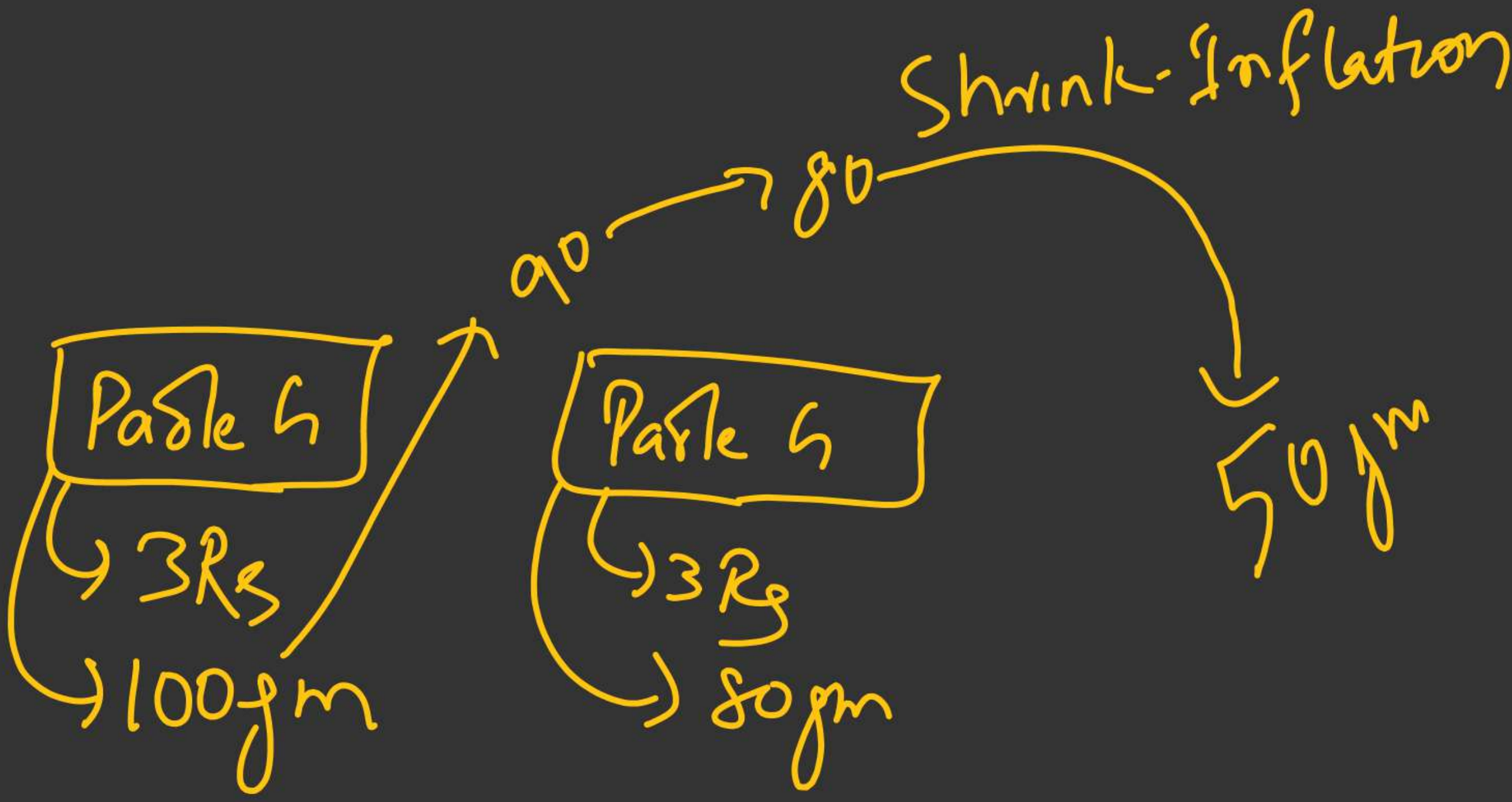
Shrink-Inflation
90
80
50gm
Parle G
3Rs
100gm
Parle G
3Rs
80gm

KHAN GLOBAL STUDIES

Most Trusted Learning Platform

THANKS FOR WATCHING